THE

PARLIAMENTARY DEBATES

OFFICIAL REPORTIN THE SIXTH SESSION OF THE COUNCIL OF STATES

commencing on the 15th February 1954

Monday, 15th February 1&54.

The Council met at a quarter to three of the clock, MR. CHAIRMAN in- the Chair.

MEMBER SWORN

SHRI B. V. GURUMOORTHY (Hyderabad).

PAPERS LAID ON THE TABLE

PRESIDENT'S ADDRESS

SECRETARY: Sir, I beg to lay on the Table a copy of the President's Address to both the Houses of Parliament assembled together on the 15th | February 1954.

THE PRESIDENT (DR. RAJENDRA PRASAD) :

राष्ट्रपति (डा० राजेन्द्र प्रसाद) : संसद् के सदस्यगण, में आज पूरे एक वर्ष के बाद संसद् के नये सत्र के लिये आप लोगों का स्वागत करने यहां आया हूं । इस एक वर्ष की अवधि में आपको बहुत सी गहन समस्याओं और भारी जिम्मेदारियों का सामना करना पड़ा है । इनमें से बहुत सी समस्यायें अभी भी उसी प्रकार हमारे साथ हैं, किन्तु मेरा विश्वास है आप लोग कह सकते हैं कि गत वर्ष में काफी सफलता मिली है । अविजेय बाधाओं और कठिनाइयों पर विजय पाने के मानव के अदम्य उत्साह के प्रतीकस्वरूप एवरेस्ट की अन्तिम विजय हुई । इस महत्वपूर्ण सफलता में एक वीर भारतीय का भी हाथ था । अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में पुराने भय और तनाव अब भी

पहले के समान बने हैं । परन्तु समझौते के प्रयत्न बराबर जारी हैं और में हृदय से विश्वास करता हूं कि इन प्रयत्नों के परिणामस्वरूप तनाव के वातावरण में सुधार होगा और पश्चिम तथा सुदूरपूर्व में भावी समझौते का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा ।

२. भारत, संसार के सभी देशों के साथ शान्ति और मैत्री की नीति का अनुसरण करता रहा है और ऐसे अवसरों पर जब यह आशा हुई कि हम शान्ति स्थापना के हेतु कुछ कर सकते हैं, हमारे देश ने जिम्मेदारियों को उठाने में कोई संकोच नहीं किया । कोरिया में मेरी सरकार ने तटस्थ राष्ट्रीय प्रत्यावर्तन आयोग की अध्यक्षता स्वीकार की और युद्ध बंदियों के भविष्य के सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय होने तक उनकी देख भाल के लिये संरक्षक सेना वहां भेजी । दुर्भाग्यवश विराम सन्धि समझौते में सुझाई गयी पद्धति के अनुसार कार्यवाही नहीं की जा सकी, जिसके कारण एक कठिन स्थिति पैदा हो गई । कुछ दिनों में ही आयोग अपना काम खतम कर देगा और अब संरक्षक सेना धीरे धीरे भारत वापस आ रही है । कोरिया में प्रमुख विवादग्रस्त प्रश्नों का अभी तक निबटारा नहीं हुआ है । मुझे पूर्ण आशा है कि संयुक्त राष्ट्र की साधारण परिषद् में, अथवा कहीं और, इन आवश्यक मामलों को सुलझाने का शीघ्र ही प्रयत्न किया जायेगा । आप सब की ओर से और मैं अपनी ओर से कोरिया

में तटस्थ राष्ट्रीय प्रत्यावर्तन आयोग में अपने प्रतिनिधियों और संरक्षक सेना के अफसरों तथा सिपाहियों की इस बात के लिये प्रशंसा करना चाहूंगा कि उन्होंने एक कठिन और नाजुक काम को बड़ी योग्यता तथा निष्पक्षता के साथ निभाया ।

३. विदेशों से भारत के सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण बने रहे हैं, यद्यपि कभी कभी गलतफहमियां पैदा हो जाती हैं। इस समय मेरी सरकार के प्रतिनिधि चीनी गणतंत्र की सरकार से तिब्बत के सम्बन्ध में सामान्य हित के विभिन्न मामलों पर बात चीत कर रहे हैं। मुझे पूरी आशा है कि इस बातचीत के परिणाम स्वरूप सभी विशिष्ट समस्याओं के बारे में समझौता हो सकेगा । सोवियत संघ और कई अन्य देशों से हमारी व्यापारिक संधियां हुई हैं । पिछले वर्ष हमारे प्रधान मंत्री की पाकिस्तान के प्रधान मंत्री के साथ मुलाकातें हुई । ये मुलाकातें मैत्रीपूर्ण थीं औरइन के फलस्वरूप दोनों देशों के बीच कई एक विवादग्रस्त मामलों के बारे में, जो बहुत दिनों से चले आ रहे थे पारस्परिक सद्भावना पैदा हो सकी । इस दिशा में हम कुछ आगे बढ़े थे पर दुर्भाग्य से कुछ ऐसी घटनाएं घटी हैं जिनके कारण प्रगति में रुकावटें पड़ रही हैं। मुझे खुशी है कि मेरी सरकार और श्रीलंका की सरकार के बीच श्रीलंका के भारतीय प्रवासियों के प्रश्न पर समझौता हो गया है । इस समझौते द्वारा उक्त समस्या का अन्तिम रूप से निबटारा नहीं होता, परन्तु उस दिशा में यह पहला कदम है और समस्या के हल के लिये गम्भीर प्रयास है। इसलिये मैं इसका स्वागत करता हूं । अपने पड़ोसी राष्ट्र, श्रीलंका तथा बर्मा से, जिनके साथ हमारा भौगोलिक ही नहीं बल्कि चिरकाल से सांस्कृतिक सम्बन्ध भी है, मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को उन्नत करने का मेरी सरकार सतत प्रयत्न करती रही है।

४. पश्चिमी एशिया के देशों और मिस्र के साथ हमारे सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण और पारस्परिक सहयोग के रहे हैं । मुझे खुशी है कि सूडान के निर्वाचन आयोग के अध्यक्ष के रूप में हमारे मुख्य निर्वाचन आयुक्त की सेवाओं की प्रशंसा की गई है और चुनाव व्यवस्थित ढंग से सम्पन्न हो गये हैं। मैं सूडान में स्वाधीनता के उदय का स्वागत करता हूं, जो स्वयमेव तो शुभ है ही, चिरकाल से त्रस्त और आज कल भी अनेक संकटों के शिकार अफ्रीकी भूखंड की भावी उन्नति के लिये भी यह एक शुभ लक्षण है ।

५. गत वर्ष इस अवसर पर मेरे अभिभाषण के बाद भारतीय संघ में आन्ध्र नामक नये राज्य का उदय हुआ है। भारतीय राज्यों में इस अभिवृद्धि का मैं स्वागत करता हूं और नये राज्य की सफलता की कामना करता हूं। भारत में राज्यों के पुनर्गठन की मांग को देखते हुए मेरी सरकार ने इस कार्य के लिये एक आयोग की स्थापना की है, जिसमें योग्य और अनुभवी सदस्य रक्खे हैं । यह कार्य बड़े और ऐतिहासिक महत्व का है । इसे वस्तुगत रूप से पूर्ण शांतचित्तता के साथ करना है, जिससे कि सम्बन्धित क्षेत्रों की जनता का और इसके साथ ही समस्त राष्ट्र का अधिक से अधिक कल्याण हो सके । मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस आयोग के काम में सभी लोग सद्भावना और समझदारी के साथ सहयोग देंगे ।

६. हमारे संघ के दो राज्यों में, ट्रावनकोर-कोचीन और पटियाला तथा पूर्वी पंजाब रियासती संघ में, आजकल आम चुनाव हो रहे हैं । उपर्युक्त दूसरे राज्य में संविधान सुचारु रूप से नहीं चल सका और नये चुनाव होने तक प्रशासन का कार्य भार मुझे अपने आधीन लेना पड़ा ।

७. हमारी प्रथम पंच-वर्षीय योजना की आधी अवधि समाप्त हो चुकी है। कुछ मामलों में प्रगति इतनी अच्छी नहीं हुई जितनी हम आशा करते थे, परन्तु कुछ अन्य मामलों में महत्व पूर्ण प्रगति हुई है। विशेष रूप से सामुदायिक योजनाओं के कार्य में उन्नति हुई है और राष्ट्रीय विकास कार्य में भी, जिसका कि श्रीगणेश अक्टूबर, १९५३ में हुआ था, संतोषजनक उन्नति हुई है । इस कार्य में जनसाधारण का योगदान बहुत उत्साहवर्धक है। इस कार्य का यह पहलू बहुत ही आशाजनक है। यद्यपि औद्योगिक उत्पादन में और कई एक दूसरे क्षेत्रों में विशेष प्रगति हुई है, फिर भी व्यापक बेरोजगारी की समस्या मेरी सरकार के लिये चिन्तन का विषय है । लोगों को अधिक रोजगार दिलाने के उद्देश्य से योजना आयोग पहली पंच-वर्षीय योजना पर पुनर्विचार कर रहा है ।

८. साधारण आर्थिक स्थिति में बराबर सुधार हुआ है । १९५२-५३ में अनाजों का उत्पादन उसके एक वर्ष पहले की अपेक्षा ५० लाख टन अधिक हुआ है और इस वर्ष की स्थिति भी अच्छी है । खाद्य की स्थिति में सुधार बहुत संतोषजनक है और देश इस दिशा में आत्मनिर्भरता के लक्ष्य की ओर तेजी से आगे बढ़ रहा है । औद्योगिक उत्पादन में, विशेषकर सूती कपड़े, कागज, रासायनिक पदार्थ, बाइसिकल, नमक और बहुत से इंजीनियरिंग सम्बन्धी उद्योगों के क्षेत्र में उत्पादन काफी ज्यादा होता रहा है । औद्योगिक उत्पादन की सूचक संख्या बढ़ कर १९५३ में १३४ हो गई, जबकि १९५२ में वह १२९ थी। युद्ध के बाद से हमारे औद्योगिक उत्पादन का यह उच्चतम स्तर है । इस्पात उद्योग के विस्तार और इस्पात के एक नये कारखाने की स्थापना के सम्बन्ध में इस समय अन्तिम कार्यवाही हो रही है । जूट और चाय उद्योग, जिन्हें बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है, अब अच्छी स्थिति में हैं ।

९. मेरी सरकार घरेलू उद्योगों की उन्नति को विशेष महत्व देती है । मुझे खेद है कि इस दिशा में सन्तोषजनक प्रगति नहीं की जा सकती है। आशा है कि अखिल भारतीय खादी और ग्राम उद्योग बोर्ड, अखिल भारतीय करघा बोर्ड और अखिल भारतीय दस्तकारी बोर्ड के प्रयत्न इस दिशा में निकट भविष्य में ही ठोस कार्य कर सकेंगे।

१०. महान् नदी घाटी योजनाओं के सम्बन्ध में सन्तोषजनक प्रगति हुई है और इन योजनाओं में से कुछ पूर्ण भी हो चुकी हैं और इस समय चालू हैं । पांच नई योजनायें, अर्थात् कोसी, कोयना, कृष्णा, रिहांड और चम्बल योजनायें, पंच-वर्षीय योजना में शामिल कर ली गई हैं । इन योजनाओं के सम्बन्ध में प्रारम्भिक व्यवस्था की जा रही हैं, जिस से कि आगामी वित्तीय वर्ष में इन्हें चालू किया जा सके । कोसी योजना के बारे में नैपाल सरकार से बातचीत चल रही है ।

११. भारत के हवाई यातायात का पुनर्गठन हो चुका है और दो सरकारी निगम, एक भीतरी यातायात के लिये और दूसरा विदेशी यातायात के लिये, स्थापित किये जा चुके हैं । विचार हो रहा है कि विदेशी सर्विसों का विस्तार करके उन्हें सुदूरपूर्व तक ले जाया जाय ।

१२. पिछले साल हमने दो युगान्तरकारी घटनाओं को मनाया —जो भारत में रेल व्यवस्था तथा तार-डाक व्यवस्था की शताब्दियां हैं । रेल यातायात में बराबर प्रगति हुई है और रेल के डिब्बों तथा इंजनों के निर्माण की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है । नये रेल मार्ग खोलने के लिये निकट भविष्य में कई एक बड़ी योजनाओं को हाथों

में लिया जायेगा । डाक और तार सम्बन्धी सुविधाओं का भी, विशेष रूप से देहाती और पिछड़े हुये क्षेत्रों में, विस्तार किया गया है ।

१३. मेरी सरकार घरों की समस्या को महत्वपूर्ण मानती है । विभाजन के बाद से विस्थापित लोगों के लिये घरों पर अभी तक ७२ करोड़ रुपया व्यय किया जा चुका है । इस के अतिरिक्त औद्योगिक कार्यकर्त्ताओं के लिये घरों के निर्माण के वास्ते ऋण और सरकारी सहायता दी गयी है । सस्ते और आकर्षक मकानों के निर्माण को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से हाल में ही एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया है, जिसकी ओर बहुतों का ध्यान आकृष्ट हुआ है ।

१४. १९५४-५५ के वित्तीय वर्ष में भारत सरकार के अनुमानित आय तथा व्यय का ब्यौरा आपके सम्मुख रखा जायगा ।

१५. संसद् के विगत सत्र के बाद सात अध्यादेश परिवर्तित करने आवश्यक हो गये । इनमें से दो का सम्बन्ध उन दो मामलों से है जिनके बारे में एक विधेयक अभी आपके विचाराधीन है । इन में से उन सभी अध्यादेशों पर विचार करने का आपको अवसर मिलेगा, जिन्हें स्थायी विधान का रूप देना आवश्यक होगा ।

१६. आपके सम्मुख २८ विधेयक विचाराधीन हैं । इनमें से कुछ पर प्रवर समितियां विचार कर चुकी हैं । दूसरे विधेयक जिन पर प्रवर समितियां आजकल विचार कर रही हैं, उक्त समितियों की सिफारिशों समेत आपके सामने रखे जायेंगे । इन विधेयकों में हिन्दू विधि के सुधार सम्बन्धी विधेयक भी सम्मिलित हैं, जिन्हें मेरी सरकार बड़ा महत्व देती है । संसद् के इस सत्र में आपके सम्मुख अन्य विधाई प्रस्ताव भी रक्खे जायेंगे जिनका सम्बन्ध सार्वजनिक कल्याण से है । न्यायालयों के कार्य को गतिशील करने और मुकदमेबाजी के व्यय को घटाने के लिये न्यायिक कार्य प्रणाली में सुधार करने को मेरी सरकार बहुत उत्सुक है ।

१७. इस मास के आरम्भ में इलाहाबाद में कुम्भ मेले के समय एक भीषण दुर्घटना घटी । इस अवसर पर यात्रियों का अपूर्व जन-समूह एकत्रित हुआ था । इस विशाल जनसमुदाय की सुविधा के लिये उत्तर प्रदेश की सरकार ने सन्तोषजनक व्यवस्था करने का बड़ा प्रयास किया था । परन्तु अमावस्या के दिन अचानक एक दुर्घटना घटी, जिसके कारण बहुत से लोग बेकाबू भीड़ के पांव तले आकर रौंदे गये और मर गये । इस दुखद दुर्घटना से यह शुभ समागम विषादपूर्ण बन गया और हमारे अनेक देशवासियों के लिये शोक का विषय हो गया । आपकी ओर से, और मैं अपनी ओर से, दिवंगत आत्माओं के सभी सम्बन्धियों को समवेदना तथा सहानुभूति भेजता हूं ।

१८. नये वर्ष का आरम्भ इस प्रकार हुआ है कि इसमें जितनी आशा की झलक है उतना ही भय भी दिखाई देता है । शान्ति स्थापना में प्रगति और तत्सम्बन्धी प्रयत्नों के सफल होने की आशा है । हमें और विश्व को कठिन परीक्षाओं का सामना करना पड़ सकता है, इस बात की आशंका भी है । मानव जाति के लिये इस संकट के समय में हम अपने देश की और समस्त विश्व की सेवा कर सकते हैं, यदि हम उन सिद्धान्तों पर अडिग रहें जिन्होंने अतीत में हमारा पथ-प्रदर्शन किया है और यदि हम राष्ट्रपिता के शान्ति, सहिष्णुता और आत्मविश्वास के सन्देश को याद रक्खें । मैं विश्वास करता हूं कि आपके कार्य कलाप में यह सन्देश आपका पथ आलोकित करेगा ।

THE PRESIDENT (DR. RAJENDIU PRASAD): Members of Parliament, I have come here, after a full year, to welcome you to the new session of Parliament. During this past year, you have had to consider many difficult problems and to shoulder heavy burdens. Many of those problems still remain with us, but I think that you may well look back on this year as one of considerable achievement. As a symbol of the indomitable spirit of man conquering almost insurmountable obstacles and difficulties, came the final conquest of Everest. With this signal achievement was associated one of our own brave countrymen. In the international sphere, the old tensions and fears continue. But efforts are being continually made to find some settlement and I earnestly trust that these efforts will lead to an easing of these tensions and will point the way to some future settlement, both in the West and in the Far East.

2. India has continued to pursue a policy of peace and friendship with all the countries of the world and has not - hesitated to undertake responsibilities where, it was hoped, this might enable her to perform some service in the cause of peace. In Korea, my Government accepted the Chairmanship of the Neutral Nations Repatriation Commission and sent a Custodial Force to take charge of the prisoners of war. pending a final decision about their future. Unfortunately, the processes laid down in the Armistice Agreement could not be carried through, as intended, and a ficult situation arose. The Commission will conclude its labours within a few days and the Custodial Force is gradually returning to India The major matters of dispute in Korea have not been settled yet. I earnestly hope that an early attempt will be made in the United Nations General Assembly, or otherwise, to give full consideration to these outstanding issues. I should like to express, on your behalf and mine, our high appre- -elation of the work of our representatives in the Neutral Nations Repatriation Commission in Korea and of our officers and men of the Custodial Force, who discharged their difficult. .urn delicate tasks with ability and impartiality.

3. India's relations with other countries continue to be friendly even though sometimes some misunderstandings arise. My Government's representatives are at present discussing with the Government of the People's Republic of China various issues oi

anion concern 'in regard to Tibet. I have every hope that these discussions will lead to a settlement of outstanding issues. Trade agreements have been made with the Soviet Union and several other countries. In the course of the past year, meetings took place between my Prime Minister and the Prime Minister of Pakistan. These meetings were friendly and led to some understandings about various matters which have long been in dispute between the two countries. While some-progress was made in this respect, unfortunately some other developments have at present come in the way of further progress. I am glad to find that an agreement has been arrived at between my Government and the Government of Ceylon over the long standing issue of the people of Indian descent in Ceylon. This agreement does net finally solve this problem but is a first step and an earnest attempt to that end and I welcome it as such. It has always been my Governmeni's

vavour to develop close and friendly relations with our neighbour countries, Ceylon and Burma, with whom India has not only geographical but cultural affinities of long standing.

4. With the countries of Western Asia and Egypt, our relations have-been of close co-operation and friend ship. I am glad that the services of our Chief Election Commissioner as Chairman of the Electoral Commission for the Sudan were appreciated and successful elections were held. I wel come the emergence of self-government in Sudan both in itself and as a symbol of future progress- in the Continent of Africa, which has suffered so much in the past, and is now undergoing a severe ordeal.

5. Since I addressed you on the last occasion, a new State in the Jndian

Union has come into existence, the] State of Andhra. I welcome this ad- j dition to our fraternity of States and wish it success. In view of the demands tor further reorganisation of the •States in India, my Government have] appointed a Commission for this pur-consisting of eminent and experi-enced members. This is a task of high and historic importance, which has to be dealt with in an objective and dis- '

lonate manner so as to promote the welfare of the people of the areas concerned as well as of the nation as a whole. I earnestly trust that the work of this Commission will be assisted by all concerned jn a spirit of harmony and understanding.

(i. In two of our States, namely, Travancore-Coehtin and Patiala and East Punjab States Union, general elections are taking place. In the latter State, the Constitution could not function properly and I had to take over charge till such time as fresh elections could take place.

7. Half the period of the first Five-Year Flan is over. In some matters progress has not been as rapid as had teen hoped, in others there has been significant progress. In particular, the Community Projects show promise and the National Extension Service, which was inaugurated in October 1953, is making satisfactory progress. The contributioJn of the people has been most encouraging. This is a particularly happy feature. Although there has been marked progress in industrial production and in other respects, my Government have been concerned at the existence of a considerable volume of unemployment. The Planning Commission have undertaken a revision of the first Five Year Plan, particularly to provide more employment.

8. There has been a continued im-provement in the general economic - situation. The output of foodgrains in 1952-53 was five million tons over the output of the previous year and this year's prospects are good. The improvement in the food situation has been highly satisfactory and the country is making rapid approach to the goal of self-sufficiency. Industrial production has continued at a high level, more particularly in cotton textiles, paper, chemicals, bicycles, cement, salt and most of the engineering industries. The index of industrial production rose to 134 in 1953 from 129 in 1952. This was the highest level of industrial production .smce the war. Plans for the expansion of steel production and for the establishment of a new iron and steel plant are now being finalised. The jute and tea industries, which were facing serious difficulties, are now again doing well.

[1] *y* Government attach special im-portance to the development of cottage industries. I regret, however, that progress in this respect has not been very satisfactory. It is hoped that the efforts of the All-India Khadi and Village Industries Board as well as the All India Handtoom Board and the All-India Handicrafts Board will yield substantial results in the near future.

10. Satisfactory progress has been marie in the great River Valley Schemes and some of the projects have already been completed and are yielding results. Five new projects, namely, the Kosi, the Koyna, the Krishna, the Rihand and the Chambal have been included in the Five Year Plan. Steps are being taken to expedite certain preliminary arrangements in regard to them, and, in the case of the Kosi, to have discussions with the Government of Nepal, with a view to starting work on these new projects during the next financial year.

11. The Air Services of India have now been reorganised and two State Corporations, one dealing with internal airlines and the other with external services, have been formed. It is proposed to extend the external ser- to the Far East.

12. In the course of the past year . two land-marks have been celebrated, namely, the centenaries of the beginning of the Railway System and the Telegraphs in India. There, has been i steady progress on the railways and

special attention is beings paid to the manufacture of locomotives and rolling stock. Some major projects of rail construction will be taken up shortly. Postal and telegraph facilities have expanded, especially in the rural and backward areas.

13. My Government attach importance to the problem of housing. A total expenditure of Rs. 72 crores has been incurred on housing for displaced persons since the Partition and loans and subsidies have been given for the construction of houses for industrial workers. With a view to encouraging the building *of* inexpensive and attractive houses, an International Exhibition on Low Cost Housing has recently been held and has attracted much attention.

14. A statement of the estimated receipts and expenditure of the Government of India for the financial year 1954-55 will be laid before you.

15. After the last session of Parliament, it became necessary to promulgate seven Ordinances. Of these, two deal with matters in respect of which Bills are pending before you. You will be asked to consider and pass such of these as require permanent legislation.

16. There are 28 Bills pending before you. Some of these have been considered by Select Committees; some others, which are still under the consideration of Select Committees, will be brought be-
you with their recommendations. Among these are the Bills dealing with reform *of* the Hindu Law to which my Government attach considerable importance. There are other legislative measures relating to matters of general public interest, which will be brought before you during the course of this session. My Government are anxious to prcceed with certain reforms relat ing to judicial procedure with a view to expediting these process^and lessening the expenditure involved in them.

17. Early in this month, a tragedy took place at the Kumbh Mela in Allahabad where a vast and unprece-dented gathering of pilgrims had collected. The Uttar Pradesh Government had taken great pains to maKe satisfactory arrangements for this great concourse of human beings. But or, *t^e* Amavas day an accidental mishap led to a large number of persons being crushed to death by the uncontrollable passage of others over them. This grievous tragedy, which marred a happy occasion, has brought sorrow to many and, on your behalf and mine, I extend my deep sympathy to the relatives of those who have suffered.

18. The new year begins with hope and fear evenly balanced. There is promise of achievement and of progress towards peace. There is also ap prehension at the trials we and the rest of the world might have to face. Jn this crisis *of* human destiny, we can serve both our own country and the larger causes of the world only by adhering to the principles that have guided us in the past and by remembering the message of peace, tolerance and self-reliance of the Father of me Nation. 1 trust that that message, will guide you in your deliberations.

BILLS ASSENTED TO BY THE *PRESIDENT*

SECRETARY: Sir, I also beg to lay on I he Table a statement showing the Bills passed by the Houses of Parliament during the Fifth Session, 1953, and assented to by the President.

Statement

1. The Sea Customs (Amendment) Bill, 1953.

2. The Rehabilitation Finance Administration (Amendment) Bill, 1953.

3. The Employees' Provident Funds (Amendment) Bill, 1953.

1. The Travancore-Cochin High Court (Amendment) Bill. 1953.

5. The Dhoties (Additional Excise Duty) Bill. 195:;.

(i. The Livestock Importation Amend-. maent) Bill, 1953.

7. The Calcutta High Court (Extension of Jurisdiction) Bill. 1953.